ओ३म्
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 फरवरी 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-११०, वर्ष-१२
माघ, विक्रमी २०७५ (फरवरी 2019)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त। शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ -ऋ० ५।३।२७।५

व्याख्यान–हे भगवन्! (तन्न इन्द्रः) सूर्य (वरुणः) चन्द्रमा (मित्रः) वायु (अग्निः) अग्नि (आपः) जल (ओषधीः) वृक्षादि वनस्थ सब पदार्थ आप की आज्ञा से सुखरूप होकर हमारा सेवन करें। हे रक्षक! (मरुतामुपस्थे) प्राणादि के सुसमीप बैठे हुए हम आपकी कृपा से (शर्मन्त्स्याम) सुखयुक्त सदा रहें। (स्वस्तिाभिः) सब प्रकार के रक्षणों से (यूयं पात) आदरार्थ बहुवचनम्, आप हमारी रक्षा करो। किसी प्रकार से हमारी हानि न हो ॥

सम्पादकीय

श्रीराम जन्मभूमि-अयोध्या

श्रीराम इस राष्ट्र के ऐसे नायक हैं जिनसे ऊपर किसी का स्थान नहीं हो सकता। उनके आदर्श और उनका व्यक्तित्व इस प्रकार राष्ट्र के लोगों के हृदय में रचा-बसा है, जिसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि यहां का प्रत्येक व्यक्ति श्रीराम के साथ किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ है। कोई उनसे नाम के रूप में जुड़ा हुआ है, कोई उनसे अभिवादन के रूप में, कोई उनको अपना आदर्श मानने के रूप में, तो कोई किसी अन्य रूप में। श्री राम के आदर्श व उनका जीवन इस देश के लोगों के लिए ही नहीं अपितु संसार भर के लोगों के लिए प्रेरणा देने वाला है। श्रीराम संसार भर की सर्वप्रथम सत्य सनातन वैदिक संस्कृति के पुरोधा रहे। उन्होंने न केवल वैदिक सिद्धान्तों को जिया अपितु अन्यों के लिए आदर्श भी प्रस्तुत किया। ऐसे द्विव्य गुणों से युक्त रहे हैं, हमारे महापुरुष श्रीराम।

और इन्हीं श्री राम की जन्मभूमि है अयोध्या। वही अयोध्या जहाँ विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा, श्रीराम की संस्कृति के विपरीत चलने वाले मत का इबादत घर निर्मित कर दिया गया। ऊपर से दुर्भाग्य इस राष्ट्र का यह भी है कि हजारों वर्षों से, जब से विदेशी आक्रान्ता यहाँ आए हैं तभी से इस राष्ट्र में श्री राम का एक भव्य स्मारक नहीं बना पाए यहां के लोग। राष्ट्र में श्री राम के भव्य स्मारक का यदि कोई सबसे उपयुक्त स्थान हो सकता है तो वह केवल अयोध्या ही हो सकता है (वैसे तो राष्ट्र में रामराज्य की स्थापना ही उनका सबसे बड़ा स्मारक है) और साथ ही यह भी आवश्ययक है कि श्रीराम के आदर्शों के विपरीत चलने वाले किसी सोच का चिन्ह तो ऐसे महापुरुष के स्मारक के आस-पास भी नहीं होना चाहिए।

अतः अयोध्या में न केवल श्रीराम का भव्य मन्दिर एक स्मारक के रूप में बने अपितु किसी मस्जिद आदि के लिए तो वहां अनुमति होनी ही नहीं चाहिए। जो लोग श्रीराम जैसे आदर्श पुरुष के वंशज होते हुए भी उन्हें अपना पूर्वज मानने से मना करते हों ऐसे लोगों का श्री राम की जन्म भूमि पर कोई स्थान देना तो इस राष्ट्र की अस्मिता का ही अपमान है। अतः अयोध्या में श्री राम का भव्य मन्दिर उनके ऐसे स्मारक के रूप में विकसित हो जहां श्री राम के आदर्शों की शिक्षा दी जा सके। जहां पंहुचकर लोग जान सकें कि श्रीराम किन आदर्शों के लिए जीये? श्रीराम ने किस संस्कृति को धारण किया? किस विद्या को लेकर श्रीराम ऐसे आदर्श स्थापित कर पाए? अर्थात् श्री राम के जीवन के हर पहलू को दर्शाने वाला संग्रहालय वहां स्थापित हो। श्रीराम का जन्मभूमि मन्दिर भी ऐसा हो कि जो उपरोक्त प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर इस राष्ट्र के जन-जन को दे सके। श्रीराम जैसे देव पुरुष का मन्दिर उसके गुणों को जनाने वाला हो। उनके आदर्शों को देने वाला हो। उनके आदर्श जो वैदिक धर्म पर आधारित थे उस वैदिक धर्म की शिक्षा देने का भी केन्द्र बने। वहां वेद-वेदांगों, उपनिषदों आदि ग्रन्थों के पठन-पाठन की पूरी व्यवस्था हो जिससे श्रीराम के गुणों को धारण करने के लिए यहां के लोगों को शिक्षा भी मिल सके। साथ ही संग्रहालय भी हो जो श्रीराम व उस काल के सभी महापुरुषों, ऋषि-मुनियों की शिक्षा देने का कार्य करे। यही श्रीराम का उपयुक्त

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

स्मारक होगा और होना चाहिए तथा इसका निर्माण शीघ्रातिशीघ्र बिना किसी बाधा के प्रारम्भ होना चाहिए। मस्जिद आदि का बहाना नहीं होना चाहिए। मस्जिद आदि का बहाना बनाकर इसे रोकना तो श्रीराम के साथ द्रोह है, उस वैदिक धर्म के साथ द्रोह है जिसका श्रीराम पालन करते थे।

लेकिन दुर्भाग्य यह भी है कि इस देश की राजनीति ने इसको इतना उलझा दिया है कि एक विदेशी आततायी का पक्ष लेने से भी लोग संकोच नहीं करते हैं। राजनीतिज्ञों ने वोट का साधन बना लिया है श्री राम को। किसी ने उसका समर्थन करके और किसी ने उसका विरोध करके। राजनीति के चंगुल से यह निकलना चाहिए और जब तक ऐसा नहीं होगा श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर और स्मारक का निर्माण ऐसे ही अटका रहेगा। चुनाव दर चुनाव आते रहेंगे। श्रीराम के आदर्शों को लोग भूलते रहेंगे, श्रीराम के नारे लगाते रहेंगे और वोटों के सौदागर लोगों की भावनाओं का दोहन करते रहेंगे।

आइए हम अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढते रहें, श्री राम की शिक्षाएं आर्य निर्माण के माध्यम से जन-जन मे फैलाते रहें। -आचार्य सतीश

आर्य छात्र महासम्मेलन का जीन्द में आयोजन

दिनांक 29 जनवरी 2019 को प्रांत 'हरियाणा' के जनपद जींद के 'एकलव्य हुडा स्टेडियम' में 'राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा' के तत्वाधान में **'आर्य छात्र महासम्मेलन'** का आयोजन किया गया । इसके मुख्य वक्ता आदरणीय आचार्य हनुमत प्रसाद जी ने छात्रों का मार्गदर्शन किया, इसके अतिरिक्त इस अवसर पर आदरणीय आचार्य अशोक पाल जी 'पूर्व अध्यक्ष राष्ट्रीय छात्र सभा' ने छात्रों को एकता का सन्देश दिया और राष्ट्रीय अध्यक्ष छात्र सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय आचार्य राजेश जी ने कहा कि छात्र सभा का उद्देश्य छात्रों का बौद्धिक और शारीरिक निर्माण करना है। मंच संचालन राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के महासचिव धनुष्मान आर्य के द्वारा किया गया।

इसी श्रृंखला में छात्रों के बौद्धिक और शारीरिक प्रतिभाओं के प्रदर्शन भी दिखाए गए जिनमें गीत, कविताएं, नाटिका एवं मार्शल आर्ट एवं लाठी चालन आदि सम्मिलित थे। कार्यक्रम में दर्जनों विद्यालयों से हजारों की संख्या में अपने अध्यापक व अध्यापिकाओं समेत छात्र और छात्राएं कार्यक्रम में पहुंचे । सम्मेलन में अनेक अध्यापकों, अध्यापिकाओं, विद्यालय संचालकों व राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के प्रचारकों को भी सम्मानित किया गया।

अनेकानेक सुमधुर गीतों, प्रवचनों एवं विद्वत गणों के उत्तम उत्तम उद्बोधन के कारण जींद की धरा पर एक गरिमा पूर्ण वातावरण उत्पन्न हुआ, सभी छात्रों ने एकाग्रता पूर्ण होकर सिद्धांतों को श्रवण किया एवं प्रेरित होते हुए अपने भावी जीवन के निर्माण हेतु संकल्प लिया ।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा इस कार्यक्रम में पहुंचे सभी बुद्धिमान विद्वतजन, आचार्यगण, अतिथिगण, अध्यापक अध्यापिका और छात्र- छात्राओं का धन्यवाद करती है और भविष्य में भी इनसे अधिकाधिक सहयोग की अपेक्षा करती है।

कार्यक्रम में इसके अतिरिक्त आचार्य जितेंद्र जी, आचार्य सतीश जी, आचार्य महेश जी, आचार्य अवनीश जी, आचार्य अश्विनी जी, आचार्या सुमन जी, आचार्या सुशीला जी, छात्र सभा के राष्ट्रीय महासचिव आर्य कप्तान जी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आर्य वरुण माथुर जी, राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आर्य वीरेंद्र छारा जी, राष्ट्रीय आर्य राज सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आर्य कुलदीप जी, प्रांत हरियाणा के प्रांतीय आर्य छात्र सभा के अध्यक्ष आर्य अमनदीप जी, निर्मात्री सभा के जनपदीय अध्यक्ष आर्य नरेन्द्र जी एवं अन्यान्य विद्वतगण एवं अतिथिगण उपस्थित रहे।

आर्य मंजीत-उपाध्यक्ष, (राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा हरियाणा प्रान्त)

समाज निर्माण में आर्य छात्रों का योगदान

-आचार्य अशोक पाल

ऋषि दयानन्द पांच सहस्र वर्षो से फूट के राजरोग से ग्रसित आर्यजाति को एकता का सूत्र बताते हुये उपदेश करते हैं कि जहाँ एकता होती है वहाँ सर्वसुख ऐसे आ मिलते है जैसे सागर में नदियाँ।

इसी से प्रेरणा पाकर समाजवादी जन नारे लगाते दिखाई पड़ते हैं, जन-जन को जागृत करते हैं कि-आवाज दो-हम सब एक हैं।

पर क्या नारे लगाने मात्र से एकता सम्भव है? क्या एकता की दुहाई देने के बाद भी हम एक हो पाये? क्या हम एक हो पायेंगे? अथवा इसका उपाय कुछ और ही है? आइये विचारते हैं।

छात्रों! छात्राओं! अपने ग्राम से ही देखते हैं। अपने गांव में भिन्न-भिन्न समाज के लोग रहते हैं। कोई जाट समाज से, कोई धानक समाज से, कोई ब्राह्मण समाज से, कोई तेली समाज से, कोई राजपुत समाज से, कोई पंजाबी समाज से, कोई वैश्य से तो कोई क्षत्रिय से अर्थात् गांव में भिन्न समाज के लोग रहते हैं।

भिन्न-भिन्न विचारधारा के लोग अपने इस समाज में रहते हैं- कोई शाकाहारी तो केई मांसाहारी, कोई शराबी, कोई कबाबी, कोई झूठा, कोई सच्चा, कोई अच्छा, कोई बुरा, कोई कर्मठ, कोई चोर। कोई धार्मिक, कोई अधर्मिक। कोई अनपढ़, कोई पढ़ा-लिखा। अर्थात् विचार धारायें अति विपरीत भी हैं।

गांव में लम्बे-समय से लोग एक साथ रहते हैं इसलिये इसे ग्रामीण समाज भी कह दिया जाता है। इनमें प्रेम भी होता है लड़ाई-झगड़े भी। कभी गली में गुजरने पर, कभी जमीन-जयादाद को लेकर, कभी किसी अहंकार-वश, कहा-सुनी, लड़ाई-झगड़ा, खून-खराबा आम बात है। जहाँ यह सब है उसे भी समाज कहा जा रहा है! आश्चर्य है! समाज होता तो लड़ाई-झगड़े की नौबत ही क्यों आती?

वास्तव में यहां समाज शब्द का व्यवहार मात्र है अन्यथा समाज तो बनाया जाता है, विचारपूर्वक, विवेकपूर्वक। ऋषि मुनियों, आर्यों की परम्परा में समाज का निर्माण ऐसे ही किया जाता है। जैसे भवन, नगर का निर्माण किया जाता है। इसके लिये आवश्यक है हम समाज निर्माण की विधि, इसके लिये आवश्यक सिद्धान्त, संसाधनों को जानें।

एक आर्य छात्र समाज निर्माण की प्रक्रिया से सुपरिचित होता है- वह जानता है कि समाज बनाने के लिये सर्वप्रथम मनुष्य को जीवन ध्येय से परीचित होना आवश्यक है, इसलिये वह अपने ग्राम के जनों को ईश्वर, जीव, प्रकृति के मौलिक सिद्धान्तों को बताते हुये उन्हें वेद, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का परिज्ञान करवाता है। सरल भाषा में लोक गीतों, भजनों, कविताओं, भाषणों के द्वारा गांव में जागरूकता अभियान चलाता है, रैलियां निकालता है, यही समाज में शिक्षा का आदिकाल से प्रकल्प रहा है।

जीवन उद्देश्य, जीवन ध्येय के प्रति दृढ़ता उत्पन्न करते हुये, उसे पूरा करते हुये जीवन सुरक्षा सुनिश्चित करने की और भी आर्यछात्र प्रयास करता है। जीवन-यापन को सरल, सुखमय बनाने के लिये गांव के लोगों को नई-नई तकनीक से अवगत करवाता है, पर जीवन ध्येय के प्रति सजग बनाये रखता है। जीवन उद्देश्य में बाधकों का नई-तकनीक से इलाज करता है।

आर्य छात्र समाज के लोगों को जीवन-सुरक्षा की गारन्टी देता है। आपसी सौहार्द, प्रेम, सद्भावना की वृद्धि का प्रयास करता है। वह जानता है कि अनेकता में एकता नहीं होती, भिन्न विचारधाराओं में एकता नहीं होती, इसलिये भिन्न विचारधाराओं में व्याप्त झूठ, छल, कपट एवं हानिकारक तत्वों को निकाल-निकाल कर सबको बताता है। क्योंकि उसे ऋषियों द्वारा प्रदत्त एकता सूत्र, जिसे संविधान निर्माताओं ने भी स्वीकार किया अर्थात् सत्यमेव जयते का मान सबको करवाता फिरता है। आर्यत्व के प्रचार-प्रसार से ही समाज निर्माण अर्थात् जनता में एकता निहित है। यही हमारे आर्य पूर्वजों की अद्वितीय प्रणाली है जिसके कारण हम अरबों, तुर्कों, मुगलों का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सके एवं अपने अस्तित्व की सुरक्षा सुनिश्चित की। अन्यथा सभी पुरातन सभ्यताओं को इतिहास निगल चुका है। किसी शायर ने लिखा भी है:-

''यूनान मिस्र रोमां सब मिट गये जहां से।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।''

वह कुछ बात क्या है इसको तो वह शायर तथा आज के अधिकांश लोग नहीं जानते, परन्तु आर्यछात्र जानता है एवं ग्राम-ग्राम में उद्घोष करता है कि:-

यूनान मिस्र रोमां सब मिट गये जहान से।
आर्यत्व ही है कारण कि अस्तित्व मिटता नहीं हमारा।।

आर्यत्व अर्थात् श्रेष्ठता, सत्यता, सभ्यता, सस्कृति के कारण ही हमारा अस्तित्व है। वास्तव में आर्यत्व ही हमारा अस्तित्व है। हम जितना इसे ग्रहण करेंगे, हम उतने ही सामाजिक बनेंगे। आर्य ही सामाजिक प्राणी है। जो आर्य विद्या से युक्त नहीं वह तो स्वयं का भी नहीं, औरों का तो क्या होगा-'आर्यत्व के लिये तो जरूरी है ज्ञान। मूर्ख चाहते केवल रोटी, कपड़ा, मकान।'

अत: हे आर्य छात्रों! आर्य छात्राओं! सारा देश आपकी और निहार रहा है। वह आपके ज्ञान का कायल है। आप समाज निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। इसके लिये शरीरिक रूप से बलिष्ठ, स्वस्थ होने की आवश्यता है। आर्य छात्र के लिये किसी कवि ने लिखा है-

'स्वस्थ बुद्धि, सबल शरीर। आर्य छात्र की तस्वीर।।'

वैसे आप जानते ही हैं कि- 'आज का छात्र कल का राष्ट्र है। छात्र ही शास्त्र है छात्र ही शस्त्र है।।'

अत: आग बढ़ो, अपनी भूमिका निभाओ। एक आर्य छात्र धैर्य नहीं खोता, न शिथिल पड़ता है। अनवरत संघर्ष करता ही रहता है क्योंकि वह जानता है कि समाज निर्माण से हमारी उन्नति तो होगी ही होगी, अपितु हजारों-लाखों-करोड़ों को भी जीवन उद्देश्य मिलेगा। अन्यथा हम सब देखते हैं।

समाज द्रोहियों से सावधान रहने की आवश्यकता है। हमें उनका मुकाबला करना है। पांच हजार से भी अधिक काल से समाज के नाम पर, एकता के नाम पर हमें छला गया है, शोषित किया गया है।

'जिसके माथे पर सामजिकता की रेखा है।
हमने उन्हें समाज-शहर जलाते हुये देखा है।'
''हमें कब जोड़ा गया? हमें तो बाटां गया।
समाज तोड़ा गया, पथ एकता का काटा गया।''

अब हम एकता पथ को, आर्यपथ को कटने नहीं देंगे। अब आर्य निर्माण, समाज निर्माण, राष्ट्र निर्माण होकर ही रहेगा क्योंकि आर्य छात्रों ने यह प्रभार अपने कधों पर जो उठाना है। यह प्रभार ऋषि दयानन्द ने गुरुदत्त विद्यार्थी के माध्यम से, लाजपत ने भगतसिंह, सुखदेव तक पीढ़ी दर पीढ़ी हम तक पहुंचाया। वर्तमान में आचार्य परमदेव मीमांसक जी ने हमें यह मार्ग दिखाया है- हम आर्यपथ, सफल पथ, एकता पथ, राष्ट्र पर अन्तिम रक्त की बूंद तक संघर्ष करते रहेंगे:-

आर्य छात्र! आर्य राष्ट्र!

वैदिक संस्कारों का महत्त्व

-आर्य सोनू हरसौला, कैथल

विवाह संस्कार

विवाह संस्कार:- सृष्टि के सतत् संचालन का यह संस्कार भी आज विकृत हो चुका है। किन्तु इसका वास्तविक स्वरूप वर्तमान से बहुत भिन्न है, जो पूर्णत: विज्ञान सम्मत है।

परोक्षप्रिया इन हिर देवा: प्रत्यक्षद्विष:।। शतपथ।।

यह निश्चित बात है कि जैसी परोक्ष पदार्थ मे प्रीति होती है वैसी प्रत्यक्ष में नहीं। जैसे किसी ने मिश्री के गुण सुने हों और खाई न हो, तो उसका मन उसी में लगा रहता है। जैसे किसी परोक्ष वस्तु की प्रसंशा सुनकर मिलने की उत्कृष्ट इच्छा होती है वैसे ही दूरस्थ अर्थात् जो अपने गोत्र व माता के कुल में निकट संबंधी न हो, उसी से वर का विवाह होना चाहिए।

निकट और दूर विवाह करने में ये गुण है-

1. जैसे पानी में पानी मिलने से विलक्षण गुण नहीं होता वैसे एक गोत्र, पितृ व मातृकुल में विवाह होने मे धातुओं के अदल-बदल नहीं होने से उन्नति नहीं होती।

2. जैसे दूध में मिश्री वा सुण्ठयादि औषधियों के योग होने से उत्तमता होती है वैसे ही भिन्न गौत्र मातृ-पितृ कुल से पृथक वर्तमान स्त्री पुरूषों का विवाह उत्तम है।

3. जैसे एक देश में रोगी हो वह दूसरे देश में वायु और खान-पान बदलने से रोग रहित होता है। वैसे ही दूर देशस्थों के विवाह होने में उत्तमता है।

इनके अलावा और भी बहुत लाभ हैं। जो सगोत्र विवाह न करने के कारण विज्ञान ने खोजे हैं। यथा-

एक शोध के अनुसार जन्मजात आनुवांशिक रोगों से बचने के लिए ''सेपरेशन ऑफ जीन्स'' सबसे बेहतरीन उपाय है। लेकिन ऐसा तभी हो सकता है जब लोग अपने नजदीकी संबांधियों के परिवार में शादी करने से बचें। सगोत्र विवाह से कलर ब्लाइन्डनेस, कम बुद्धि, अल्पायु, रोग निरोधक क्षमता की कमी, अपंगता, विकलांगता आदि विकार होते है।

सपिण्ड (सगोत्र) विवाह निषेध ऐसी भारतीय वैदिक परम्परा है जो पूर्णत: विज्ञान अनुमोदित है। आधुनिक अनुसंधान और सर्वेक्षणों के अनुसार फिनलैंड में कई शताब्दियों से चले आ रहे विवाहों के रिवाज में अन्त: प्रजनन के कारण ढ़ेर सारी बीमारियां सामने आई हैं। बी.बी.सी. की पाकिस्तानियों पर ब्रिटेन की एक रिपोर्ट के अनुसार उन के बच्चों में 13 गुना आनुवांशिक रोगों के होने की संभावना अधिक मिली। बी.बी.सी. ने यह भी कहा है कि पाकिस्तान में यू.के. के पाकिस्तानी समुदाय में प्रसवकालीन मृत्यु दर काफी अधिक है। इसका मतलब यह है कि यू.के. में अन्य सभी जातीय समूहों के मुकाबले जन्मजात सभी ब्रिटिश पाकिस्तानी शिशु मौतें 41 प्रतिशत अधिक पाई गई हैं।

उपरोक्त विवरण स्पष्ट करता है कि सगोत्र विवाह निषेध का वैज्ञानिक महत्व है वह कोरी धार्मिक व्यवस्था नहीं है।

एक विशेष बात महर्षि यह लिखते है कि नक्षत्र, नदी, वृक्ष, पर्वत, पक्षी आदि के नाम वाली से विवाह न करें क्योंकि ये नाम कुत्सित और अन्य पदार्थो के भी है। ऐसे नाम रखने से बाद में अनावश्यक आडम्बर और अन्धविश्वास फैलता है जैसे- महावीर हनुमान जी के पिता का एक अन्य नाम किसी उपमा के कारण पवन रहा होगा, आज समाज में अनेक लोग उन्हे बहने वाली पवन का पुत्र मानने लगे। उसी तरह पितामह देवव्रत भीष्म जी की माता का नाम गंगा रहा होगा किसी विशेषता से, किन्तु वर्तमान में बहुत लोग उन्हे गंगा नदी का पुत्र मानने लगे।

अत: विवाह संस्कार को सही प्रकार से जानें और वर्तें।

'अंत्येष्टि कर्म'

विज्ञान की दृष्टि से अंत्येष्टि कर्म (मृत जीवों को जलाना) सर्वोत्तम है, गाड़ना सबसे बुरा है, उससे कुछ बुरा जल में डालना है। क्योंकि उसको जल-जन्तु उसी समय चीर-फाड़ कर खा जाते हैं। परन्तु जो कुछ हाड़ व मल जल में रहेगा वह सड़कर जगत के लिये दुख-दायक होगा। उससे कुछेक थोड़ा बुरा जंगल मे छोड़ना है, क्योंकि उसको मांसाहारी पशु-पक्षी खांएगे। तद्यापि जो उसके हाड़ की मज्जा और मल सड़कर जितना दुर्गन्ध करेगा, उतना जगत का अनुपकार होगा। जो जलाना है वह सर्वोत्तम है। उसके सब पदार्थ अणु होकर वायु मे उड़ जांएगे। एक बिश्वा भर भूमि में लाखों मृत्तक जल जाएंगे और कब्र के देखने से जो भय होता है, वह भी न रहेगा। इससे गाड़ना आदि सर्वथा निषिद्ध है। मृत्तक को जलाने से हमें वैज्ञनिक दृष्टि से अनेक लाभ है। यथा-

1. मृत्तक को जलाने से भूमि अत्यन्त कम खर्च होती है।
2. कब्रिस्तान के कारण बहुत रोग वायुमंडल में फैलते है।
3. कब्रिस्तान के पास से होकर गुजरने वाला जल रोगकारक होता है।
4. कुछ पशु मृत्त शरीर को निकालकर खा जाते हैं और रोगी व सड़े शरीर को खाने से वे रोग मनुष्य में भी फैलाते हैं।
5. मजारों की पूजा व चढ़ावे से जो करोड़ो रूपये व्यर्थ जाता है, वह बच जाएगा और शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा आदि कार्यों पर व्यय होगा।
6. अनेक दुष्ट उनकी समाधि पर जाकर शराब आदि पीते है, वह भी जलाने से समाप्त होगा।

अन्य संस्कार

संस्कारों के क्रम को इसीलिए भी करना पड़ा क्योकि कुछ पर अधिक लिखने की जरूरत थी। बाकी का वर्णन जो शेष है यहां करते हैं। इनमें से नामकरण संस्कार का वही महत्व है कि नाम सार्थक और सही रखें। जैसे कि भीष्म और हनुमान जी के उदाहरण से समझा है। कर्णवेध संस्कार का चिकित्सकीय महत्व है। कोरियाई अनुसन्धान कर्त्ताओ ने कान छेदने से वजन कम होने का दावा किया है व लोगों को तीन वर्गों मे बांटा गया। एक वर्ग के लोगों के कान 5 जगह से छेदे गए। दूसरे वर्ग के लोगों के कान को एक जगह से तथा तीसरे वर्ग के लोगों के कान को छेदा ही नहीं। तीनों वर्गों को समान खाना और निर्देश दिए गए। इनके वजन का आंकलन 4 सप्ताह बाद किया गया तो उनके वजन मे बहुत अन्तर देखने को मिला। जिस वर्ग के लोगों के कान 5 जगह से छेदे गए उनका वजन कम तथा बिना छेद वालों का वजन ज्यों का त्यों पाया गया।

वानप्रस्थ और संन्यास का महत्त्व स्वयं की आध्यात्मिक उन्नति व धार्मिक महत्त्व है क्योंकि मनुष्य को संस्कारवान बनाना भी अत्यावश्यक है। बिना संस्कार के मनुष्य के हाथों मे आकर विज्ञान भी एक श्राप बन जाता है। वर्तमान में विकृतियों का कारण यही है। विज्ञान प्रदत्त मशीने और सुविधाए तो हैं किन्तु संस्कार नहीं। अत: मनुष्य इनका दुरुप्रयोग करके श्रेष्ठ मानव जीवन को यूं ही गवां रहा है। यहां संस्कारों से होने वाले वैज्ञानिक लाभ को बताने का प्रयत्न किया है। संस्कारों की सही विधि के लिए संस्कार विधि पढ़ें।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	04 फरवरी	दिन-सोमवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-श्रवण
पूर्णिमा	19 फरवरी	दिन-मंगलवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-आश्लेषा
अमावस्या	06 मार्च	दिन-बुधवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-शतभिषा
पूर्णिमा	21 मार्च	दिन-गुरुवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-उ.फाल्गुनी

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

भोजन-छादन ऐसी रीति से करें कि जिससे कभी रोग, वीर्यहानि वा प्रमाद न बढ़े। जो-जो बुद्धि के नाश करनेहारे नशा के पदार्थ है, उनका ग्रहण कभी न करें, किन्तु जो -जो ज्ञान बढ़ाने और रोग-नाश करेनहारे पदार्थ हों, उन्ही का सेवन सदा किया करें। नित्यप्रति परमेश्वर का ध्यान, योगाभ्यास, बुद्धि का बढ़ाना, सत्य धर्म की निष्ठा और अधर्म का सर्वथा त्याग करते रहें। जो-जो पढ़ने में विघ्नरूप कर्म हों उनको छोड़कर पूर्ण विद्या की प्राप्ति करें। इत्यादि दोनों के गुण-कर्म हैं।

[सत्य-असत्य की परीक्षा के उपाय]

(प्र॰)-सत्य और असत्य का निश्चय किस प्रकार से होता है, क्योंकि जिसको एक सत्य कहता है, दूसरा उसी को मिथ्या बतलाता है। उसके निर्णय करने में क्या-क्या निश्चित साधन हैं?

उत्तर-पाँच है। उनमें से १. ईश्वर, उसके गुण-कर्म-स्वभाव और वेदविद्या। २. सृष्टिक्रम। ३. प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण। ४. आप्तों का आचार, उपदेश, ग्रन्थ और सिद्धान्त। ५. और अपने आत्मा की साक्षी, अनुकूलता, जिज्ञासुता, पवित्रता और विज्ञान।

पहला ईश्वरादि से परीक्षा करना उसको कहते हैं कि जो-जो ईश्वर, ईश्वर के न्याय आदि गुण, पक्षपातरहित सृष्टि बनाने का कर्म और सत्य, न्याय, दयालुता, परोपकारता आदि स्वभाव और वेदोपदेश से सत्य और धर्म ठहरे वही सत्य और धर्म ठहरे वही सत्य और जो-जो असत्य और अधर्म ठहरे वही असत्य और अधर्म है। जैसे कोई कहे कि बिना कारण और कर्त्ता के कार्य होता है, सो सर्वथा मिथ्या जानना। इससे यह सिद्ध होता है कि जो सृष्टि की रचना करनेहारा पदार्थ है वही ईश्वर और उसके गुण कर्म स्वभाव वेद और सृष्टिक्रम से ही निश्चित जाने जाते हैं।

दूसरा सृष्टिक्रम उसको कहते हैं कि जो-जो सृष्टिक्रम, अर्थात् सृष्टि के गुण कर्म और स्वभाव से विरुद्ध हो वह मिथ्या, और अनुकूल हो वह सत्य कहाता है। जैसे कोई कहे कि बिना माँ-बाप के लड़का, कान से देखना, आँख से बोलना आदि होता वा हुआ है, ऐसी-ऐसी बातें सृष्टिक्रम के विरुद्ध होने से मिथ्या और माता-पिता से सन्तान, कान से सुनना और आँख से देखना आदि सृष्टिक्रम के अनुकूल होने से सत्य ही हैं।

तीसरा प्रत्यक्ष आदि आठ प्रमाणों से परीक्षा करना उसको कहते हैं कि जो-जो प्रत्यक्षादि प्रमाणों से ठीक-ठीक ठहरे वह सत्य, और जो-जो विरुद्ध ठहरे वह मिथ्या समझाना चाहिए। जैसे किसी ने किसी से कहा कि यह क्या है? दूसरे ने कहा कि पृथिवी, यह **'प्रत्यक्ष'** है। इसको देखकर इसके कारण का निश्चय करना **'अनुमान'**। जैसे विना बनानेहारे के घर नहीं बन सकता, वैसे ही सृष्टि का बनानेहारा ईश्वर भी बड़ा कारीगर है, यह दृष्टान्त **'उपमान'**। और सत्योपदेष्टाओं का उपदेश वह **'शब्द'**। भूतकालस्थ पुरुषों की चेष्टा, सृष्टि आदि पदार्थों की कथा आदि को **'ऐतिह्य'**। एक बात को सुनकर बिना सुने कहे प्रसंङ्ग से दूसरी बात को जान लेना, यह **'अर्थापत्ति'**। कारण से कार्य होना आदि को **'सम्भव'**। और **आठवां 'अभाव' अर्थात्** किसी ने किसी से कहा कि जल ले-आ। उसने वहाँ जल के अभाव को देखकर तर्क से जाना कि जहाँ जल है वहाँ से लााकर देना चाहिए, यह **अभाव** प्रमाण कहाता है। इन-इन आठों प्रमाणों से जो-जो विपरीत न हो वह-वह सत्य, और जो-जो उलटा हो, वह मिथ्या है।

चौथा आप्तों के आचार और सिद्धान्त से परीक्षा करना उसको कहते हैं कि जो-जो सत्यवादी, सत्यकारी, सत्यमानी, पक्षपातरहित, सबके हितैषी, विद्वान् सबके सुख के लिए प्रयत्न करें, वे धार्मिक लोग **'आप्त'** कहाते हैं । उनके उपदेश, आचार, ग्रन्थ और सिद्धान्त से युक्त हो वह सत्य, और जो-जो विपरीत है, वह असत्य है।

पांचवां आत्मा से परीक्षा उसको कहते हैं कि जो-जो अपना आत्मा अपने लिए चाहे, सो-सो सब के लिए चाहना। और जो-जो न चाहे सो-सो किसी के लिए न चाहना। जैसा आत्मा में वैसा मन में, जैसा मन में वैसा क्रिया में होने को जानने-जनाने की इच्छा, शुद्धभाव और विद्या के नेत्र से देखके सत्य और असत्य का निश्चय करना चाहिए।

इन पाँच प्रकार की परीक्षाओं से पढ़ने और पढ़नेहारे तथा सब मनुष्य सत्यासत्य का निर्णय करके धर्म का ग्रहण और अधर्म का परित्याग करें और करावें।

(प्र॰)-धर्म और अधर्म किसको कहते हैं ?

(उ॰)-जो पक्षपातरहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, पाँचों परीक्षाओं के अनुकूल आचरण, ईश्वराज्ञा का पालन, परोपकार करना रूप 'धर्म' और जो इससे विपरीत वह 'अधर्म' कहाता है। क्योंकि जो सबके अविरुद्ध वह 'धर्म' और जो परस्पर विरुद्धाचरण है सो **'अधर्म'** क्योंकर न कहायेगा?

देखो! किसी ने किसी से पूछा कि सत्य क्या है? उसने उत्तर दिया-जो मैं मानता हूँ। फिर उसने पूछा-और जो वह मानता है, वा जो मैं मानता हूं, वह क्या है? उसने कहा कि अधर्म है। यही पक्षपात से मिथ्या और विरूद्धचार 'अधर्म'। और जब तीसरे ने दोनों से पूछा कि सत्य बोलना धर्म अथवा असत्य? तब दोनों ने उत्तर दिया कि सत्य बोलना **'धर्म'**, और असत्य बोलना **'अधर्म'** है, इसी का नाम 'धर्म' जानो। परन्तु यहाँ पाँच परीक्षा की युक्ति से सत्य और असत्य का निश्चय करना योग्य है।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/if=kdk पर जाएं।

22 जनवरी–19 फरवरी–2019 **माघ** ऋतु– शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
	आश्लेषा कृष्ण द्वितीया 22 जनवरी	मघा कृष्ण तृतीया 23 जनवरी	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण चतुर्थी 24 जनवरी	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण पंचमी 25 जनवरी	हस्त कृष्ण षष्ठी 26 जनवरी	चित्रा कृष्ण सप्तमी 27 जनवरी
स्वाती कृष्ण अष्टमी 28 जनवरी	विशाखा कृष्ण नवमी 29 जनवरी	अनुराधा कृष्ण दशमी 30 जनवरी	ज्येष्ठा कृष्ण एकादशी 31 जनवरी	मूल कृष्ण द्वादशी 1 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण त्रयोदशी 2 फरवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण चतुर्दशी 3 फरवरी
श्रवण कृष्ण अमावस्या 4 फरवरी	धनिष्ठा शुक्ल प्रतिपदा 5 फरवरी	धनिष्ठा शुक्ल द्वितीया 6 फरवरी	शतभिषा शुक्ल द्वितीया 7 फरवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल तृतीया 8 फरवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल चतुर्थी 9 फरवरी	रेवती शुक्ल पंचमी 10 फरवरी
अश्विनी कृष्ण षष्ठी 11 फरवरी	भरणी शुक्ल सप्तमी 12 फरवरी	कृतिका शुक्ल अष्टमी 13 फरवरी	रोहिणी शुक्ल नवमी 14 फरवरी	मृगशिरा शुक्ल दशमी 15 फरवरी	आर्द्रा शुक्ल एकादशी 16 फरवरी	पुनर्वसु शुक्ल द्वादशी/त्रयोदशी 17 फरवरी
पुष्य शुक्ल चतुर्दशी 18 फरवरी	आश्लेषा शुक्ल पूर्णिमा 19 फरवरी				सुभाष जयन्ती 23 जनवरी	

20 फरवरी–21 मार्च–2019 **फाल्गुन** ऋतु– शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		मघा कृष्ण प्रतिपदा 20 फरवरी	उ.फाल्गुनी कृष्ण द्वितीया 21 फरवरी	हस्त कृष्ण तृतीया 22 फरवरी	चित्रा कृष्ण चतुर्थी/पंचमी 23 फरवरी	स्वाती कृष्ण षष्ठी 24 फरवरी
विशाखा कृष्ण सप्तमी 25 फरवरी	अनुराधा कृष्ण अष्टमी 26 फरवरी	ज्येष्ठा कृष्ण नवमी 27 फरवरी	मूल कृष्ण दशमी 28 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण दशमी 1 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण एकादशी 2 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण द्वादशी 3 मार्च
श्रवण कृष्ण त्रयोदशी 4 मार्च	धनिष्ठा शुक्ल चतुर्दशी 5 मार्च	शतभिषा कृष्ण अमावस्या 6 मार्च	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल प्रतिपदा 7 मार्च	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल द्वितीया 8 मार्च	रेवती शुक्ल तृतीया 9 मार्च	अश्विनी शुक्ल चतुर्थी 10 मार्च
भरणी कृष्ण पंचमी 11 मार्च	कृतिका शुक्ल षष्ठी 12 मार्च	रोहिणी शुक्ल सप्तमी 13 मार्च	मृगशिरा शुक्ल अष्टमी 14 मार्च	आर्द्रा शुक्ल नवमी 15 मार्च	पुनर्वसु शुक्ल दशमी 16 मार्च	पुष्य शुक्ल एकादशी 17 मार्च
आश्लेषा शुक्ल द्वादशी 18 मार्च	मघा त्रयोदशी 19 मार्च	पू॰ फाल्गुनी चतुर्दशी 20 मार्च	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल पूर्णिमा 21 मार्च			

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj Arya, Delhi

9. Whatever leisure a member gets from household work, he shall devote the same to the good of the Samaj with greater earnestness than that displayed in the discharge of household duties. Those that have no family to care for should, in particular, be always striving to promote the well-being of the body.10. Every eighty day, the President, the Secretary and other members fo the Samaj, shall come together in the Samaj mandir, giving precedence to punctual attendance to everything else.

11. Having assembled together, they should be calm and composed in their minds, and in a spirit of love and free bias, they may ask question and obtain answers from each other. This done, they shall sing the hymns of the Samaj Veda in praise of god, and songs bearing on true Dharma, righteous conduct and right teaching, to the accompaniment of musical instruments. And the mantras shall be commented upon, and explained and lectures delivered on similar topics. After this, there shall be music again, to be followed by interpretation of mantras and speeches as before and so on in succession.

12. Every member shall cheerfully contribute a hundredth part of the money he has earned honestly, and with the sweat of his brow, towards the funds of the Samaj, the Arya Vidyalaya, and the Arya Prakasha paper, if he contributes more, the greater shall shall be his reward. The Money thus contributed shall be used for the purposes specified and in no other way.

13. The more an individual bestirs himself in bringing income to the Samaj for the purposes specified, and for the diffusion of a knowledge of the teachings of the Arya Samaj, the more honore shall he receive for his energy and zeal.

14. The Samaj shall do state, prarthana, and upasana (i.e., shall glorify, pray to and hold communion with the only God) in the manner commanded by the Vedas to speak of God as the being who is formless, almighty, just, infinite, immutable, eternal, incomparable, merciful, the father of all, the mother of the entire universe, all supporting, the lord of all, possessing the attributes of truth, intelligence, happiness, and so on, as all pervading and the know of all hearts, indestructible, deathless, everlasting, pure and conscious, as inherently in a state of salvation, to speak of Him as endowed with such and similar other qualities and attitudes is to do his state (i, e., to glorify and praise Him). Asking His help in all righteous undertakings is identical with prarthana (i.e., praying to Him and to become absorbed in the contemplation of His Essence, which is absolute Happiness, is termed upasana (i, e., holding communion with Him). The aforesaid Being, possessing the attributes of incorporate, etc., shall alone be adored and naught besides.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

The session was very good and I learned many things from here. The Acharya told us many unknown facts about which I was unaware. I would give my best in spreading the light of Arya Samaj so that people get aware about this like me. I think we should organise such session even at village. town level.

Name: Seema , Age: 26, Quli.: M.tech, Work: Govt. Job, Add.: Meerut cant. Uttar Pradesh.

यह मेरा प्रथम सत्र है इतनी अच्छी अनुभूति है कि मुझे इस समय यही महसूस हो रहा है जैसे मेरे जीवन का लक्ष्य प्राप्त हो चुका है। अति हर्ष की अनुभूति हो रही है। साथ ही अपने राष्ट्र की दयनीय स्थिति को जानकर दुख, क्रोध का मिश्रित भाव आ रहा है। आचार्य जी को सुनकर मन राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हो गया। इस परम मार्ग पर चलने के लिए अति-उत्साहित हूं। इस लघु-गुरुकुल के अनुभव को अपने सम्बन्धियों से भी साझा करुँगी। सभी को इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करूंगी। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूँ कि यहाँ आने का अवसर मिला। मैं तन-मन-धन से अपना योगदान करना चाहती हूँ अगर मुझसे किसी कार्य के लिए सहयोग की आवश्यकता होती है मैं हर क्षण अति प्रसन्नता से योगदान दूंगी। कृप्या सेवा का अवसर दें।

नामः सृष्टि त्यागी, आयुः 20 वर्ष, योग्यताः एम.ए., पताः गांधी कॉलोनी मुजफ्फरनगर उ.प्र.।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा का मेरा दो दिन का अनुभव काफी सुखद रहा, दो दिन में जो बाते सीख पाना बहुत मुश्किल काम होता है आप आचार्यों के सनिध्य में बड़े ही सरल और स्पष्ट ढंग से वो सब कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। पहले भी आर्य समाज से जुड़ा रहा हूँ, दैनिक यज्ञ करना भी सीखा और प्रतिदिन किया भी है। परन्तु कुछ छूट गया था जो यहां आ कर लगा कि वास्तव में लगा कि प्राप्त कर लिया। वेद का महत्व जरूर है यह जानता भी हूं मानता भी हूं और प्रयास रहेगा कि अपने संपर्क में जितने भी लोग आएगें उन सब को वेद के साथ जोड़ना है सहयोग की तो अपने सामर्थ्य से भी बढ़कर जितना हो सकेगा हर प्रकार (तन-मन-धन कार्य) से सहयोग भी करता रहूगां।

नामः जतीन्द्र आर्य, आयुः 32 वर्ष, योग्यताः बी.एड., कार्यः अध्यापक, पताः नारायाणगढ़, अम्बाला, हरियाणा।

मुझे दो दिन के अल्पकाल में निश्चित रूप से गागर में सागर भरने का कार्य हुआ। मन पर पड़े अन्धकार को हटाने का प्रयास हुआ है। हवन प्रक्रिया, वेदों के व्याख्यान व अपने मूल से दूराव का ज्ञान हुआ। प्रचारकों द्वारा दिया गया ओजपूर्ण, प्रभावशाली विचारधारा ने काफी प्रभावित किया है। सम्पूर्ण संचालन व कार्यप्रणाली अतिउत्तम व व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत की गई। मेरा व्यक्तिगत आग्रह है कि यदि सभी सहभागी रात्री निवास भी करते तो अपने विचार साझा करने से और लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सर्वप्रथम अपने स्वयं पर बहुत मेहनत की आवश्यकता है, इसके उपरान्त पूर्ण तन-मन-धन से राष्ट्र की सेवा का भाव मन में है, शिक्षक होने के नाते प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में छात्रों से जुडकर प्रसार के अधिक अवसर हैं।

नामः मनोज कुमार, आयुः 39 वर्ष, योग्यताः परास्नातक, पताः नयागांव, मोहाली, पंजाब।

पहले मैं आर्यों के बारे में कुछ नहीं जानता था तथा मेरे सहयोगियों की वजह से मैं सत्र में आया और समझा कि आर्यो का मतलब सब मिलकर अपनी देश व राष्ट्र को बचाना तथा हमें हर एक हिन्दु को आर्य बनाना है। तथा पहले मैं भी यह सोचता था कि आर्य एक हिन्दु हित तथा राष्ट्र के लिए कार्य करते हैं। अब मैं साफ शब्दों में कह सकता हूं कि आर्य सर्वहित में विश्वास रखते हैं। जिस तरह से मैनें यहां आकर जाना व समझा तथा उस माध्यम से मेरे से जो भी कुछ होगा करूँगा तथा मेरा तन-मन-धन से सहयोग करूँगा।

नामः तुषार निमेश, आयुः 23 वर्ष, योग्यताः बी.ए., व्यवसायः विद्यार्थी, पताः नूहँ, हरियाणा।

श्री आचार्य के सानिध्य में आने से पहले नहीं जानता था। परम पिता परमेश्वर सत्य चेतन व सत्य के बारे में विस्तार से जाना जो कि मेरी अंतरआत्मा में समय-समय पर बोध होता था। लेकिन हम परपरांगत तौर-तरीकों पर ही अंधविश्वास बस चलते थे और मानते थे। लेकिन ये दो द्विवसीय सत्र में आकार मैंने अपनी पुनःअंतराअत्मा की आवाज सुनी इसलिए मैं आचार्य जी का तह दिल से धन्यवाद करता हूं और मैं अपने आप को बहुत ही सुलझा व सिद्धान्तवादी महसूस कर रहा हूँ।

नामः रमेश, आयुः 22 वर्ष, योग्यताः स्नातक, व्यवसायः विद्यार्थी, पताः पुन्हाना नूहँ, हरियाणा।

संध्या काल

माघ- मास, हेमन्त ऋतु, कलि-5119, वि. 2075 (22 जनवरी 2018 से 19 फरवरी 2019)	फाल्गुन- मास, बसन्त ऋतु, कलि-5119, वि. 2075 (20 फरवरी 2019 से 21 मार्च 2019)
प्रातः कालः 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 A.M.)	प्रातः कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)
सायं कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)	सायं कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 P.M.)

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्रि सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।